



RAN - 1801130401020001

RAN-1801130401020001**M.A. (Sem. I) Examination November - 2023****Sanskrit : Paper - II****Vedic Literature ऋग्वेद (नियतांश) अथर्ववेद (नियतांश)****Time: 2 Hours]****[Total Marks: 50****सूचना : / Instructions**

(१)

नीचे दशविवेक निशानीवाणी विगतो उत्तरवली पर अवश्य लपवी.
Fill up strictly the details of signs on your answer book

Name of the Examination:

M.A. (Sem. I)

Name of the Subject :

Sanskrit : Paper - II Vedic Literature ऋग्वेद (नियतांश)
अथर्ववेद (नियतांश)

Subject Code No.: 1801130401020001

Seat No.:

Student's Signature

प्र. १**टूंकमां जवाब आपो. (गमे ते पांच)****१०**

१. वेद शब्द समजावी तेने बीजा कया नामथी ओणभवामां आवे छे ते जण्णावो.
२. 'भेषज्य सूक्तम्' मां कर्ण कर्ण चिकित्सा पद्धतियोनो उल्लेख छे?
३. ऋग्वेदना विभागो जण्णावो तेमज वेदोने विभात करवानुं काम कोणो कर्णु?
४. राष्ट्रनी उन्नतिमां अभिवर्त मणिनुं कार्य लणो.
५. त्वष्टाअे कोने माटे अस्त्र बनाव्युं तेनाथी कोनो वध करवामां आव्यो?
६. 'शालानिर्माणम्' सूक्तमां शानी प्रार्थना करवामां आवी छे?
७. 'सर्पविषनाशनम्' सूक्तमां कर्ण कर्ण बाबतो मुण्य छे?

प्र. २ (अ)**गमे ते बेनो अर्थदर्शक नोंध सहित अनुवाद करो.****०८**

१. अहन्नर्हि पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वये ततक्ष।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रभव जग्मुरापः॥ (१-३२-२)
२. अग्निं नरो दीर्घितिभिररण्योर्हस्तच्युतीजनयन्त प्रशस्तम्।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्॥ (७-१-१)

३. वनस्पतेऽर्वं सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति।
सेदु होता सत्योतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद॥ (७-२-१०)
४. त्वे ह यत्पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन्।
त्वे गावः सुदुधास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः॥ (७-१८-१)

(ब) गमे ते अेकनो अर्थदर्शक नोध सहित अनुवाट करो.

०५

१. शं नः सूर्य उरुचक्षा उदैतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥७-३५-८)
२. यद्विजामन्यपरुषि वन्दनं भुवनष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत्।
अग्निष्टच्छोचन्नप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदत्सरुः॥ (७-५०-२)

प्र. ३ आप्रीसूक्त विशे विवेचनात्मक नोध लभो.

१३

अथवा

प्र. ३ प्रस्वापिनी सूक्त सविस्तर यथा करो.

प्र. ४ टूंकनोध लभो. (गमे ते बे)

१४

१. आपां भेषज्यसूक्तम्।
२. सत्यानृतसमीक्षकवरुणसूक्तम्।
३. वनस्पतिसूक्तम्।
४. शालानिर्माणसूक्तम्।